रात्रीक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 30.1.68

जिनमें दैवी गुण होते हैं उनसे सबकी प्रीत होती है। गुण ही जिसमें नहीं है उनसे प्रीत क्या करेंगे?प्रीत भी समझकर रखी जाती है। अपने से पूछना चाहिए हम कितना समय सर्विस करता हूं। नहीं तो बहुत2 बोझा चढ़ेगा। 21जन्म लिए सर्वेंट ही बनूंगा। सर्विस ही नहीं करता हूं तो बाप क्या देंगे? काम करने वालों के आगे भड़ी ढोवेंगे। कोई में अवगुण है तो समझा जाता है इनमें कोई भी गुण नहीं है। ऐसे भी हैं। ऐसे का संग भी खराब है। यहां तो बच्चों को पुरुषार्थ करना है। मैनर्स भी देखी जाती है। सबको सुख देने वाला जरूर सबको प्यारा लगेगा। क्रोध करने वाले से किनारा कर देना चाहिए। भूत आया ,भाग जाओ। भूत के आगे बोलना न चाहिए ;परंतु देखा जाता है बात करने लग पड़ते हैं। तो सबमें भूत आ जाता है। रिपोर्ट तो बाबा पास आती है ना। समझाना होता है यह भूत न आना चाहिए। इससे बात न करना अच्छा है। लोभ भी होना न चाहिए। तुम सब वानप्रस्थी हो। वाणी से परे जाने वाले। पापात्मा तो जाय न सके। विकर्मों का बोझा है ना। याद रहे तो कुछ विकर्म भी कम हो। क्रोध आदि है तो समझा जाता है यह याद करते नहीं हैं। बाप कुछ काम कहे और न करे तो सौणा डन्ड पड़ जाता है। नाफरमानबरदार का कलंक लग जाता है। ईश्वर का नाफरमानबरदार। इसलिए बाबा कब कहते भी नहीं हैं। बच्चों को समझ होनी चाहिए। अभी तो बेहद के बाप से जितना हो सके सदा सुख का वर्सा ले लेवें। अच्छे2 बच्चों को फालो करना चाहिए। किसको दुःख न देना चाहिए। बच्चे तो समझते हैं ड्रामा है। राजधानी स्थापन होने की है। टीचर को नफरत क्यों आवेगी? समझेंगे ही नहीं तो नाम बदनाम होगा। बहुत नापास होंगे तो लिफ्ट नहीं मिलेगा। यह तो बाप समझते हैं कल्प पहले जो एक्ट हुई थी वह होगी। राम को भी नापास रखते हैं ना। युद्ध के मैदान में नापास हुआ तो फिर त्रेता में आ गया। तो भी अच्छी मेहनत की होगी। पुरुषार्थ कर अभी तो पद पावेंगे। वह कल्प कल्पांतर पाते रहेंगे। बच्चों को सब सा0 होगा। कोशिश कर अपना कल्याण करना चाहिए। सर्विस कर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहिए। दिल पर चढ़ना अच्छा है। रावणराज्य है तब तो रावण को जलाते हैं। रावणराज्य में रावण सम्प्रदाय यथा राजा रानी.... ....यह बहुत सहज है। गुस्सा नहीं लगेगा। रामराज्य में हो तो देवी–देवता। रावणराज्य में असुर हो। रावण को जलाते हो, नहीं मरता है। तो है ना। अब पावन बन पावन दुनियां का मालिक बनना है। अभी रावणराज्य में सब बेसमझ हैं। रामराज्य में होते हैं समझदार। अभी सभी पत्थर बुद्धि हैं। पारस बुद्धि बनने पुरुषार्थ कर रहे हैं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ एक बाप को याद करो तो पाप का बोझा सर से हल्का हो जावेगा। बाप को याद करने से ही पुण्यात्मा बन सकते हैं। सबसे जास्ती कल्याण याद में बैठने में है। बाप शांति का सागर है, सुख का सागर है। उनसे ही वर्सा लेना है। चलते–फिरते बाप को याद करो। फिर दैवी गुण भी धारण करनी है। बाप को याद करना है। कोई को दुःख नहीं देना है। कड़वा नहीं बोलना है। ओम।

प्वाइंट्स– तुम बच्चे जानते हो वहां स्वर्ग में तो हीरे–जवाहर ,सोने आदि के महल थे। सो फिर जरूर रिपीट होगा। फिर वही मंदिर आदि बनावेंगे। कितना भारत साहुकार था। ऐसे भारत के तुम मालिक बन रहे हो। विश्व के मालिक बनते हो। बाप खुद तो विश्व के मालिक बनते नहीं। तुम ही विश्व के मालिक थे। फिर 84 जन्म लेते2 तमोप्रधान बने हो। बाप कहते हैं मैं आकर सभी का उद्धार करता हूं। यहां विकार की बात नहीं। रावणराज्य नहीं। बाप कितनी मीठी2 प्वाइंट सुनाते हैं। यहां से बाहर गए फिर उल्लू के उल्लू बन जाते हैं। भक्तिमार्ग है ही उल्टा मार्ग। ज्ञान मार्ग है सुल्टा। भक्तिमार्ग में टांगे उपर ,सर नीचे करते हैं। ज्ञान मार्ग में तो सिर उपर होता है, टांग नीचे। उल्लू उल्टा लटकते हैं ना। मनुष्य सभी उल्टा लटके हुए हैं। अभी बाप तुमको सुल्टा बनाते हैं। बच्चों को पुरुषार्थ करना है। बाकी बाबा कोई से दो लाख लेकर क्या करेंगे?कहेंगे जाकर म्युजियम खोलो। मकान तो खतम हो जावेंगे। बाबा तो व्यापारी है ना। सर्राफ भी है। दुःख के जंजीरों से छुड़ाय सुख देने वाला है। अभी बाकी थोड़ी रही है। बहुत हंगामा होने का है। ओम।